JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विकास की दिशा में अग्रसर भारत - विजन 2047 के संदर्भ में

खुशी करवरिया।
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड।
विश्वविद्यालय छतरपुर (म. प्र.)

डॉ कल्पना वैश्य
सह प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड
विश्वविद्यालय छतरपुर(म. प्र.)

सारांश :- *भारत की भारती का आओ वंदन करें ,निज अर्थव्यवस्था पर मिलकर मंथन करें*

बढ़ चले विकास की ऐतिहासिक राह पर , 2047 के राष्ट्र का अभिनंदन करें ।।

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है । ।स्वतंत्रता के साथ ही भारत को व्यापक रूप में गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता , आतंकवद ,क्षेत्रवाद , भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं भी मिली । यह समस्याएं अपने आप में इतनी जटिल थी जिनका निराकरण बहुत ही शीघ्र संभव नहीं था , पर असंभव भी नहीं था। लंबी परतंत्रता के पश्चात एक बिखरे हुए देश को संवारने के लिए निश्चित रूप से समय की आवश्यकता थी । कहते हैं ना कि समय सारे घाव भर देता है और समय के साथ सब ठीक हो जाता है। कुछ वैसा ही परिदृश्य भारत में इन 75 वर्षों में प्रस्तुत हुआ।भारत अभी एक विकासशील राष्ट्र है क्योंकि विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारत की प्रति व्यक्ति आय अभी बहुत कम है।किंतु आज विकास के सभी क्षेत्रों में बढ़ोतरी के साथ भारत 2047 के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है । प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के विजन 2047 के मार्ग में आने वाली चुनौतियों और उनके समाधानों और इस संकल्प को पूरा करने मैं सहयोग करने वाली उपलब्धियों की विवेचना प्रस्तुत की गई है ।

कुंजी शब्द - विकसित , भारत ,विजन ,2047

परिचय :-

भारत सांस्कृतिक विविधता ,भौगोलिक अखंडता और राष्ट्रीय एकता की गरिमा से सुशोभित राष्ट्र है । भारत में अंग्रेजों का आगमन सन् 1600 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में हुआ जो यहां व्यापार करने आए थे । 1858 में सैनिक विद्रोह के परिणाम स्वरूप ब्रिटिश क्राउन ने भारत के शासन का उत्तरदायित्व अपने हाथों में ले लिया । यह व्यवस्था 1947 तक कायम रही । 15 अगस्त 1947 को आजादी के साथ ही भारत ने अपने विकास की गाथा लिखनी शुरू कर दी थी । 26 जनवरी 1950 को विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान लागू करके

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत ने स्वयं को स्थापित किया ।वर्ष 2047 में भारत की आजादी को 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। विदित है कि 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हमारे महापुरूषों , क्रांति वीरों ने कुछ लक्ष्य निर्धारित किए थे और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कुछ संकल्प निर्धारित किए थे तब जाकर लगभग 200 से अधिक वर्षों की गुलामी से हमें आजादी मिल पाई थी । आज भारत इतिहास के एक नए युग में प्रवेश के लिए खड़ा है । दुनिया के समक्ष अपने विकास की गाथा लिखने को उत्सुक है । परतंत्रता के पश्चात देश ने जो स्वतंत्रता प्राप्त की वह निश्चित ही हमारे लिए अनमोल है । और वर्तमान समय तक के इन 75 वर्षों में हमने जो सफलताएं अर्जित की हैं वह हमारी धरोहर है । क्योंकि इन 75 वर्षों में भारत ने एक लंबी विकास यात्रा तय की है । और आज भी विकास की यह अनवरत यात्रा जारी है ताकि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाया जा सके ।

शोध उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र लिखने का उद्देश्य वर्ष 2047 के विज़न में सहयोग देने वाले क्षेत्रों को जानना एवं इस विजन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को पहचानना और उसके उचित समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास करना है । इस शोध पत्र के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि आजादी के बाद से ही भारत में अपनी विकास गाथा में किन–किन अध्यायों को शामिल किया है और किस सीमा तक प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है । और वह कौन सी बाधाएं हैं । जो अभी भी भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में सम्मिलित होने से रोकती हैं ।

शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध पत्र को लिखने के लिए प्राथमिक आंकड़ों के रूप में अवलोकन विधि एवं सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है एवं द्वितीयक आंकड़ों के रूप में सरकारी रिपोर्ट , पुस्तकों एवम शोध आलेखों तथा ऑनलाइन सामग्री का प्रयोग किया गया है ।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की उपलब्धियां :- जीवन में हर व्यक्ति स्वतंत्र रहना चाहता है । कल्पना कीजिए कि यदि हमें किसी ऐसे कमरे में रख दिया जाए जहां हमें समस्त भौतिक सुख सुविधा मिले लेकिन हमसे हमारी आजादी छीन ली जाए तो निश्चित ही उन तमाम सुख सुविधाओं के बावजूद भी हम वास्तविक रुप से प्रसन्न नहीं कहलाएंगे । ऐसा मेरा विचार है कि स्वतंत्रता से बड़ी कोई सुविधा नहीं है ।हम भारतीयों से बेहतर शायद ही कोई आजादी की कीमत समझ सकता है । एक लंबे समय के पश्चात आजादी मिलने पर सोने की चिड़िया कहे जाने वाले इस भारत के पंख काटे जा चुके थे। लेकिन हम भारतीय अपने साहस ,अपने संकल्प ,अपने दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर एक बार फिर से विश्व गुरु बनने के लिए तैयार खड़े थे ,एक बार फिर से सोने की चिड़िया बनने के लिए तैयार थे । भारत के लिए यह सब कुछ इतना आसान तो नहीं था किंतु फिर भी हमने सकारात्मक इच्छा शक्ति के साथ प्रयास शुरू किए । इस विकास यात्रा में भारत ने कई मोर्चों पर उतार–चढ़ाव भी देखे।तो कई मोर्चों पर विफल हुए तो कई मोर्चों पर उपलब्धियां भी हासिल की हैं । स्वतंत्रता के पश्चात भारत में विकास की स्थिति कुछ इस प्रकार रही --

शिक्षा के क्षेत्र में विकास - किसी भी देश के विकास में वहां की शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण योगदान होता है । स्वतंत्रता के बाद भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में काफी हद तक विकास किया है। देश की आजादी के बाद एजुकेशन फॉर ऑल के नारे के साथ देश में शिक्षा के महत्व को बढ़ाया गया । स्वतंत्रता के समय भारत में साक्षरता दर मात्र 12% दर्ज की गई थी जो की 2011 की जनगणना के अनुसार अब 74.4 % हो गई है। जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% और महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 % आँकी गई है । वर्ष 1961 में एनसीईआरटी की स्थापना , वर्ष 1956 में यूजीसी की स्थापना ,नवंबर 2000 में केंद्र सरकार द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत , आईआईटी, ऐम्स और आईआईएम जैसे प्रयास निश्चित रूप में देश के शैक्षिक विकास की राह में सहयोगी भूमिका निभा रहे हैं ।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में विकास - औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान समय तक आर्थिक क्षेत्र में भी विकास की एक तीव्र गति देखने को मिली है । जिस समय भारत स्वतंत्र हुआ था उसे समय भारत की जीडीपी या कहा जाए कुल आय 2.7 लाख करोड़ थी और जनसंख्या 34 करोड़ थी , आज 2024 में देश की कुल जीडीपी 295.4 लाख रुपए के करीब हो चुकी है । इंस्टाफ्रक्चर के विकास से लेकर 2008 की आर्थिक मंदी और कोरोना काल की आर्थिक समस्याओं से भी देश उलझा और समस्याओं का समाधान किया गया। एक दशक तक जो अर्थव्यवस्था 11वें और 12 वें स्थान पर मानी जाती थी। वर्तमान समय में वह विश्व में पांचवें स्थान पर आ पहुंची है । निश्चित रूप से यह भारत के विकास के लिए एक सकारात्मक बिंदु है । सोलर एनर्जी के माध्यम से देश को ऊर्जा क्षेत्र में सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है ।अभी भारत विकासशील राष्ट्रों के पायदान पर खड़ा है और 2047 तक विकसित होने के आकांक्षा रखता है । विश्व बैंक के अनुसार जिन देशों में प्रति व्यक्ति आय $12000 यानी 10 लाख रुपए से अधिक सालाना हो पाती है उन देशों को उच्च आय की विकसित अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाता है । देश का विदेशी मुद्रा भंडार 300 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है जो बाहरी ताकतों से लड़ने में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सहयोगी साबित हो रहा है। 2047 तक भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के लक्ष्य के साथ भारत आगे बढ़ रहा है।

अंतरिक्ष कार्यक्रमों के क्षेत्र में विकास –

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने भारत को कल्याणकारी राज्य के रूप में दृष्टिगत किया था । भारत को कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए शिक्षा और अर्थव्यवस्था के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक सकारात्मक निवेश पर आवश्यक था । वर्तमान समय विज्ञान और अनुसंधान का युग है ।यही कारण है कि आज जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान के साथ-साथ जय अनुसंधान का भी नारा दिया जाता है । आज भारत के मिशन मंगलयान , मिशन चंद्रयान 2 ,मिशन आदित्य L1 आगामी मिशन गगनयान सभी कार्यक्रमों ने भारत की गौरव गाथा को अंतरिक्ष तक स्थापित कर दिया है। भारत ने अपना पहला अंतरिक्ष उपग्रह वर्ष 1975 में तैयार किया था इस उपग्रह का नाम महान भारतीय ज्योतिषाचार्य और गणितज्ञ आर्यभट्ट के नाम पर रखा गया था। निश्चित रूप से यदि स्वतंत्रता के समय से वर्तमान समय तक एक दृष्टि डाली जाए तो हम यह प्राप्त कर पाएंगे कि भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक विशेष उपलब्धि हासिल की है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास –

भारत की विकास यात्रा में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान देखा जा रहा है । देश के सेवा क्षेत्र का प्रमुख विकास टेली सेवाओं और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। 1990 के दशक से ही सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार वृद्धि दर्ज की गई है । वर्ष 1998 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद में आईटी सेक्टर का योगदान 1.2 प्रतिशत दर्ज किया गया था । जो वर्ष 2023 में बढ़कर लगभग 10% तक हो गया है । वर्तमान समय में भारत एक सशक्त आईटी पावर के रूप में उभर रहा भारत की जीडीपी में 13% से अधिक का योगदान देने वाला आईसीटी सेक्टर निश्चित रूप से भारत की विकास की दिशा में मिल का पत्थर साबित हो रहा है । जो निश्चित ही भारत के विकास की राह में एक सहयोगी भूमिका के रूप में स्थापित होगा ।

5 . राजनीतिक क्षेत्र महिलाओं की भागीदारी बढ़ी –

एक समय था जब महिलाएं केवल घरेलू कामकाज तक ही सीमित थी । किंतु आज महिला राजनीतिज्ञ की सबसे अधिक संख्या भारत में दर्ज की गई है। भारत के शीर्ष पदों पर महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है। इंदिरा गांधी , प्रतिभा पाटिल , वर्तमान भारतीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आदि भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के शीर्ष उदाहरण है। लोकसभा और राज्य विधानसभा में नारीवंदन विधेयक के द्वारा भी 33 फ़ीसदी सीटें

महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी गई है । यह भी भारत की विकास यात्रा का शुभ सूचक है। कहां भी गया है –

“”यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तित्राफलाः क्रियाः।।“

अर्थात जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहां स्वयं देवता भी निवास करते हैं और जहां स्त्रियों का तिरस्कार होता है वहां किए जाने वाले सारे शुभ कर्म भी निष्फल हो जाते हैं। स्त्री सुरक्षा आज देश का एक व्यापी मुद्दा है । तमाम कानूनी सुरक्षा और नियमों के बावजूद भी देश में आए दिन छोटी-छोटी बच्चियों और महिलाओं के साथ अपकृत्य हो रहे हैं । यदि हम बात कर रहे हैं 2047 के विकसित भारत की तो हमें इस मुद्दे को भी ध्यान में रखना होगा । 2047 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान स्थान बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की तरफ तीव्र गति से बढ़ रहा है । लैंगिक समानता और महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुख लक्ष्य है । इसलिए भारत को अपने विजन विकसित भारत के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए इस सतत लक्ष्य को पूरा करना भी अति आवश्यक है ।

क्योंकि विकास का तात्पर्य केवल आर्थिक क्षेत्र में विकास नहीं होता है । आज उत्पादन क्षेत्र ,सेवा क्षेत्र , सामाजिक क्षेत्र ,सांस्कृतिक क्षेत्र सभी क्षेत्रों में भारत विकास की एक नई गाथा लिखने की अवश्यकता है । वैश्विक महामारी कोविद-19 के उन्मूलन में भी भारत का बड़ा योगदान रहा है । साथ ही देश में एक निश्चित समय में इस महामारी से उनमुक्ति प्राप्त कर ली गई और स्वदेशी वैक्सीन का निर्माण किया गया। जो वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देश के अस्तित्व के लिए एक सकारात्मक प्रभाव साबित हुआ है।

भारत के विकास के मार्ग में आने वाली प्रमुख चुनौतियां :-

भारत के लिए यह विकास यात्रा सरल नहीं थी ।और नहीं आगे बहुत आसान होने वाली है। इसमें कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है , और आगे भी कई चुनौतियों का सामना देश को करना पड़ सकता है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो ,अर्थव्यवस्था का क्षेत्र हो ,आईसीटी हो अथवा महिलाओं से जुड़े हुए मुद्दे हो या देश की सुरक्षा की बात हो वर्तमान में भी कई चुनौतियां हैं जो विजन विकसित भारत की विकास यात्रा के लिए अग्रसर भारत की राह में कांटो के समान प्रतीत हो रही हैं । कुछ मुख्य चुनौतियां इस प्रकार है -

1 – आर्थिक क्षेत्र में तीव्र प्रगति के बावजूद भी आज भी देश के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी गंभीर समस्या बनी हुई है। कॉविड-19 के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि में एक नकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है । आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में कृषि और उससे जुड़े हुए क्षेत्रों में पिछले 6 वर्षों में 4.6 प्रतिशत औसत वार्षिक वृद्धि दर अंकित की गई है जो अवांछित वृद्धि दर से कम है ।

2 – जातिगत विभिन्न कानून के निर्माण के बावजूद आज भी समाज में जाति को लेकर निम्न मानसिकता बनी हुई है । सामाजिक एकता और एकजुटता देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है । लेकिन आज भी देश में जातिगत समस्याएं लोकतंत्र को खोखला करने का कार्य कर रही हैं ।

3–आज भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रिंट मीडिया के माध्यम से हमें भ्रष्टाचार के नित नए उदाहरण मिलते रहते हैं । भ्रष्टाचार भी विकास के राह में एक बड़ी बाधा है। वर्ष 2023 में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार भ्रष्टाचार बोध सूचकांक में भारत में 40 अंक प्राप्त किए है।

4-आज भी राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में लैंगिक असमानता देखने को मिलती है जो कहीं ना कहीं विकास के मार्ग को बाधित करती है । वैश्विक लैंगिक सूचकांक 2023 में भारत को 127 वॉं स्थान प्राप्त रहा ।जो बहुत ठीक नही है ।

5-21वीं सदी के भारत में आज भी महिलाएं उस स्तर पर सुरक्षित नहीं है जिस स्तर की सुरक्षा उन्हें मिलनी चाहिए । विभिन्न कानून के होने के बावजूद भी हर दिन कहीं ना कहीं किसी ने किसी महिला के साथ अपराध आज भी होता है। जब बात हम विकास की करते हैं तो निश्चित रूप से महिलाओं की स्थिति पर विचार करना बहुत आवश्यक है।

6.भारत में 65% से अधिक आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जहां आज भी स्वास्थ्य सुविधाओं का पर्याप्त अभाव है । ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पताल तो बना दिए जाते हैं किंतु अस्पताल में ना तो चिकित्सक होते हैं और ना ही समुचित स्वास्थ्य सेवाएं ।

विजन विकसित भारत 2047 के मार्ग में आने वाली समस्याओं हेतु समाधान -

कोई भी समस्या तब तक समस्या होती है जब तक की उसका समाधान ना खोजा जाए निश्चित रूप से भारत के विकास के मार्ग में आज भी विभिन्न प्रकार की चुनौतियां हैं किंतु इन चुनौतियों का समाधान भी खोजा जा सकता है । इसके लिए हमें कुछ प्रमुख क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे –

शिक्षित नागरिक ही एक देश के विकास में सबसे बड़े सहयोगी भूमिका में होते हैं। अतः वर्तमान समय में हमें कौशल युक्त और प्राविधिक शिक्षा पर बल देना चाहिए जिससे बेरोजगारी जैसी समस्याओं को जड़ से मिटाया जा सके । नई शिक्षा नीति भी इस दिशा में मददगार साबित हो रही है ।

देश में 60 फ़ीसदी से अधिक लोग कृषि पर आश्रित हैं। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए हमें कृषि और कृषि शिक्षा को भी मजबूती प्रदान करनी होगी ।सूखाग्रस्त इलाकों को सिंचित करने की आवश्यकता है ।ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के पलायन को रोका जा सके ।

भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए नैतिक पारदर्शिता को बढ़ावा देना चाहिए । सरकारी नियंत्रण से मुक्त एक भ्रष्टाचार विरोधी संस्था का भी निर्माण किया जाना चाहिए जो पूरी तरीके से पारदर्शी हो।

हर जगह किसी महिला के साथ उसके पिता उसके भाई उपस्थित नहीं होते हैं । लेकिन उसके पिता और भाई की उम्र का कोई ना कोई व्यक्ति अवश्य उपस्थित होता है तो हम अपनी महिलाओं , बेटियों को एक सुरक्षित परिवेश देने की कोशिश करना चाहिए ।

स्वास्थ्य का क्षेत्र बुनियादी आवश्यकता का क्षेत्र माना जाता है। आज आवश्यकता है इसके लिए हमें शिक्षा और स्वच्छता जैसे अन्य क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जिन भी ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सकों की नियुक्ति हो वह चिकित्सक उन ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करें , यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए ।

मौलिक अधिकारों की मांग के साथ-साथ मौलिक कर्तव्य का पालन करना भी सीखें । मौलिक कर्तव्यों का पालन करना देश के नागरिकों की नैतिक ही नहीं आवश्यक जिम्मेदारी है ।

निष्कर्ष :-

यही उचित समय है कि हम इन सभी समस्याओं के समाधानों को खोजने का प्रयास करें । हर संस्था ,हर व्यक्ति को अपने स्तर पर जागरूक रहने और बढ़ाने की आवश्यकता है ।इन सभी बिंदुओं पर यदि ईमानदारी से कार्य किया जा सके तो निश्चित ही आने वाले समय में विकास की दिशा में अग्रसर यह भारत विकास की अनुपम गाथा लिख सकता है और 2047 तक भारत कृषि ,अंतरिक्ष, परमाणु ,विश्व स्तरीय शिक्षण संस्थानों ,लोक स्वास्थ्य सेवाओं ,आयुर्वेदिक पद्धतियों, बायोटेक्नोलॉजी, सूचना प्रौद्योगिकी, आदि सभी क्षेत्रों में चहुंमुखी विकास कर सकता है ।जिस भारत देश ने विश्व को शून्य से परिचित करवाया, जिस भारत देश में अतिथि को देवता माना जाता है, जिस भारत ने विश्व में वसुदेव कुटुंबकम की भावना का प्रचार प्रसार किया । उस भारत देश के नागरिक यदि संकल्प कर ले तो 2047 तक भारत विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में अवश्य ही दिखाई दे सकता है ।

संदर्भ सूची –

Agrawal,pramod.(2020).India's development and challenges and solutions.

Lokbharti prakashan.

Bajpeyi, Akanksha.(2021). Growing india from developing to

Developed.vivekanandInternational foundation. New delhi.

Bajpeyi, shalini.(2022).Bharat75 :achievements after independence.drashti

Iasblog .

Kuthiala, brajkishore.(2022).Bharat 2047 A collective vision.prabhat prakashan

Pvt Ltd .delhi.

https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-india-on-way-to-become-a-developed-nation-end-of-amrit-kaal-india-will-be-full-of-all-virtues-23429883.html

https://www.aajtak.in/explained/story/pm-narendra-modi-independence-day-speech-2023-how-india-become-developed-country-2047-ntc-1757966-2023-08-15